भगवान कृष्ण के अनन्य प्रेमी : भक्त रसखान

डॉ. गजेन्द्र मोहन,

सह आचार्य– हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय,नसीराबाद (अजमेर)

मध्यकाल में मुगलों के भारत की ओर आकर्षित होने का कारण यहां की समृद्धि एवं अनुकूल मौसमी वातावरण भी एक कारण था । कुछ मुगल शासक ने यहां रहकर भारत में अपनी राजनीतिक सूझबूझ का परिचय दिया तो कुछ केवल लूट खसोटकर यहां से चलते बने । इन मुगल शासकों के साथ ही अरब देशों की ओर से कुछ सूफी संत आदि भी भारत में आए जिनका एकमात्र उद्देश्य था – भारत में इस्लाम का प्रचार प्रसार करना । इन सूफी संतों ने यहां आकर अपना काम शुरू कर दिया , किंतु हिंदू धर्म की आस्थाओं में दृढ़ भारतीय जनता और उनके दर्शन एवं धर्म पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तब इन सूफी संतों ने इसका एक सरल उपाय खोजा। उन्होंने भारतीय प्रेम कथाओं के माध्यम से प्रतीक रूप में अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन करने का मानस बनाया , क्योंकि सीधे तरीके से तो भारतीय उनके दर्शन को हजम कर ही नहीं पा रहे थे। ये सूफी संत इस्लाम के वफादार थे और किसी न किसी तरह भारतीयों को भी इस्लाम की ओर मोड़ना चाहते थे ।भारत की हिंदू संस्कृति के उदारवादी दृष्टिकोण ने इन्हें अपना मान लिया किंतु इन मुस्लिम कट्टरपंथियों ने हिंदू दर्शन और संस्कृति को नहीं अपनाया । भारत में प्रचलित बहुदेववाद, बाह्याडंबर और मूर्ति पूजा आदि का इन्होंने सर्वत्र विरोध ही किया। एक मुस्लिम के लिए ईश्वर के कई रूपों की उपासना तथा मूर्ति पूजा अथवा बुतपरस्ती सर्वथा वर्जित थी । मुगलों के बढ़ते प्रभाव तथा हिंदुओं के प्रति उनके अत्याचार ने हिंदुओं को खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त करने से लाचार बना दिया , फिर ऐसे माहौल में किसी मुस्लिम द्वारा हिंदुओं के देवी देवताओं के प्रति आकृष्ट होना और उसकी उपासना में लीन होकर सगुण भक्त की उपाधि पाना असंभव सा प्रतीत होता है । किंतु ऐसे कई नामों में से एक नाम सबसे पहले मस्तिष्क में उभरता है – सैयद इब्राहिम रसखान, जिनका जन्म संवत् 1590 विक्रमी में पिहानी, जिला हरदोई, उत्तर प्रदेश में माना जाता है । ताल्लुकेदारी माहौल में इन्होंने अपना बचपन बिताया और किशोरावस्था में दिल्ली पहुंच गए । संवत 1612 के आसपास दिल्ली में मची राजनीतिक उथल–पुथल से खिन्न होकर तथा अकाल पीड़ित होकर इन्होंने ब्रजभूमि में कदम रखा।1 ब्रजभूमि का कण कण कृष्णमय था ही, वहां रहकर इस मुस्लिम का यौवन श्री कृष्ण की माधुर्य भक्ति में अलौकिक प्रेम को प्राप्त हुआ । कृष्ण के इस अद्भुत और दिव्य प्रेम ने रसखान को जीने की उद्दाम लालसा प्रदान की। कृष्ण का यह अनन्य प्रेमी इतना प्रसिद्ध हुआ कि सूरदास और मीराबाई जैसे हिंदू कृष्ण भक्त कवियों की श्रेणी में जा खड़ा हुआ । मुस्लिमों के प्रति हिंदुओं के संकुचित दृष्टिकोण के पश्चात भी हिंदू धर्मानुयाइयों ने इस मुस्लिम भक्त को स्वीकार तो किया ही, साथ ही सर आंखों पर भी बिठाया । कृष्ण भक्ति संप्रदायों में अग्रणी पुष्टि संप्रदाय के संस्थापक वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने इन्हें अपने मंदिर में बुलाया और वहीं रसखान कृष्ण लीला का गान करते हुए गोपी – भाव की भक्ति में निष्णात हुए । ऐसा वर्णन दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता में स्पष्ट दिखाई पड़ता है ।2 रसखान के जीवन के संबंध में बहुत अधिक जानकारी तो उनके काव्य से ही मिलती है, किंतु इतना तो काव्य पढ़कर कहा ही जा सकता है कि

हिंदी और संस्कृत दोनों भाषाओं का इन्हें यथेष्ट ज्ञान था तथा इनका जीवन सहज ही रहा है। ब्रजभूमि एवं कृष्ण के प्रति इनका इतना अधिक प्रेम था, कि हर जन्म में ब्रज की मिट्टी ही नसीब हो ऐसी इच्छा यह करते थे :–

" मानुस हों तो वही रसखानि बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।

जो पसु हों तो कहा बस मेरो चरों नित नंद की धेनु मंझारन ।।

पाहन हों तो वही गिरि को जो धरयो कर छत्र पुरंदर धारन ।

जो खग हों तो बसेरो करों मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन ।। "3

मनुष्य ही नहीं अगर पशु, पत्थर या पक्षी का जन्म भी मिले तो भी रसखान ब्रज की मिट्टी में ही पैदा होना चाहते हैं। पुनर्जन्म की लालसा तो पूरी हुई हो या ना हुई हो किंतु इस जीवन में तो रसखान ने अपने शरीर के कण–कण को ब्रजभूमि में समाहित कर लिया। मरणोपरांत रसखान की समाधि ब्रज भूमि स्थित महावन में ही बनाई गई जो आज भी देखी जा सकती है। रसखान के बारे में प्रसिद्ध है कि कभी वे किसी वणिक पुत्र के अथवा एक स्त्री के प्रेम में अनुरक्त थे, किंतु प्रेम में प्रताड़ित होकर रसखान कृष्ण भक्ति में तल्लीन हुए । कारण कोई भी रहा हो परंतु एक मुस्लिम का सगुण उपासना में आकर कृष्ण की मुरली के वशीभूत हो जाना, तत्कालीन परिवेश में एक असाधारण सी घटना थी। कृष्ण के प्रेम में वे सब कुछ भूल जाते हैं, परंतु एक भूल जो उनसे कृष्ण से प्रेम करने की हुई वे उसे नहीं भूलते। उस भूल ने ही तो रसखान को रस की खान बना डाला । कृष्ण की अठखेलियां और बाल सुलभ शैतानियां रसखान को कृष्ण से प्रेम करने के लिए उकसाती हैं । कृष्ण की अठखेलियों से प्रेम करके रसखान का जीवन स्वयं अठखेलियों में लिप्त हो जाता है और अब इनके बिना रहना असंभव है : –

" काहू को माखन चाखि गयो, अरु काहू को दूध दही ढरकायो ।

काहू के चीर लै रूख चढ़यो अरु काहू को गुंज छरा छहरायो ।।

मानै नहीं लरजै रसखान, सुजानी ही राज इन्हें घर आयो ।

आउरी बूझै जसोमति सौं, यह छोहरा जायो कि भय उपजायो ।।"4

यह सारा रस प्राप्त करने ही तो रसखान दिल्ली छोड़कर कृष्ण धाम ब्रजभूमि में आए थे। कृष्ण का यही प्रेम तो उन्हें यहां खींच कर लाया था : –

" देखि गदर हित साहिबी दिल्ली नगर मसान,

छिनहीं बादसाह बंस की, ठसक छोड़ी रसखान।

प्रेम निकेतन श्री वनहिं आए गोबरधन धाम,

लहयौ सरन चितचाय के जुगल सरूप ललाम ।"5

इस गोवर्धन धाम में आकर वे कृष्ण के शरीर से एकमेक हो गए। मन तो एक हुआ या ना हुआ उसकी इन्हें परवाह नहीं, वे तो दो शरीरों के एक होने को ही प्रेम का सच्चा रूप मानते हैं : –

" दो मन एक होते सुनयो पै वह प्रेम न आहि।

होई जबै द्वै तनहु इक, सोई प्रेम कहाई ।।6

उनका तन कृष्ण के तन में एकाकार हो गया है। कृष्ण के शरीर में मिल जाने का गौरव उन्हें कृष्ण के साथ एक नवीन जीवन की शुरुआत करने की पिपासा को शांत करता है। तभी तो वे गोपी के रूप में अपने को कृष्ण के साथ एकरूप होना स्वीकार करते हैं : –

" मोरपखा सिर ऊपर राखिहों , गुंज की माल गले पहिरोंगी।

ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन, गोधन ग्वारिन संग फिरोंगी।।

भावतों ओहि मेरो रसखानि सो तेरे किए सब स्वांग करोंगी ।

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरोंगी।। "7

कृष्ण से रसखान का प्रेम अलग ही प्रकार का है ।यह प्रेम कभी रसखान को रुला देता है तो कभी हँसा देता है। कभी इस प्रेम का सहज स्पर्श पाकर वे तप उठते हैं, तो कभी हर्षित हो जाते हैं । कुछ भी हो अलौकिक आनंद का प्रदाता तो यही प्रेम ही है। पीड़ायुक्त रहकर भी यह प्रेम आनंददायक है । कृष्ण स्वयं इस प्रेम के वशीभूत हैं ।यही प्रेम तो उनको छछिया भर छाछ पर नाच नचाता है। जब कृष्ण ऐसे प्रेमी है तो फिर उनका प्रेमी भी तो वैसा ही होगा ।रसखान का प्रेम सांसारिक प्रेम, पारलौकिक प्रेम अथवा किसी भी अन्य लगाव से बड़ा लगाव था। इस प्रेम को पाकर ना तो बैकुंठ की चाह रहती है, ना ही बैकुंठनाथ की। केवल उनके प्रेम की ही अभिलाषा मात्र रह जाती है : –

" जेहि पाए बैकुंठ अरु हरिहूं की नहिं चाह ।

सोई अलौकिक सुद्ध सुभ सरस सुप्रेम कहाहि ।।"8

अपने प्रेमी की अन्य प्रेमिका को रसखान स्वीकार नहीं करते। यह तो मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, इसीलिए रसखान के मन में यदि कोई सबसे अधिक खटकता है तो वह है बाँस से बनी बांसुरी, जो कृष्ण को इतना वश में किए हुए है कि दिन रात उनके होठों संग लगी रहती है। इस सौतन के डाह को सहना अब बहुत कठिन है। यदि ब्रज में कृष्ण के साथ बांसुरी रहेगी, तो रसखान कहीं दूसरी जगह भाग चलने को उद्यत हो जाते हैं :–

" जग कान्ह भए बस बांसुरी के, अब कौन सखी हमको चहिहै ।

यह राति दिना संग लागी रहै, वा सौती की साँसन को सहिहै ।।

यह मोहि लियो मनमोहन को, रसखान सु क्यों न हमें दहिहै ।

मिलि आओ सबै कहीं भागि चलें, अब तो ब्रज में बांसुरी रहिहै ।।"9

अतः कृष्ण के प्रेम में पागल रसखान तन मन धन से कृष्ण के प्रति समर्पित हैं। धर्म का बंधन उन्हें रोक नहीं पाया । जाति पाति का कोई प्रभाव उनके बीच में रुकावट नहीं बना। वे तो उद्दाम प्रेम के झूले पर झूलते नजर आते हैं। कृष्ण का सानिध्य उन्हें मिलता रहे, बस उनकी यही लालसा है और वह इसी लालसा को मन में लिए ब्रज में भटकते फिरते रहे। एक डर उन्हें सताता रहा कहीं कृष्ण उनसे विमुख न हो जाएँ। कृष्ण के सारे तानों तनावों को भी वे सहन कर सकते हैं, किंतु प्रेम के प्यासे रसखान स्वप्न में भी श्री कृष्ण से दूर नहीं हो सकते :–

" डरै सदा, चाहैं न कछु, सहै सबै जो होय ।

रहै एक रस चाहि के, प्रेम बखानो सोय ।।"10

इस प्रेम को पाने के लिए तो नियम धर्म आदि को ताक पर रख दिया गया था । अब कोई कुछ भी कहे रसखान तो सांवले सलोने के रंग में रंग कर ही दम लेंगे। रसखान तो जन्म जन्म से कृष्ण के दास हैं ,क्योंकि प्रभु अनन्य है । ऐसा ही अनन्य उनका भक्त है। एक मुसलमान कृष्ण भक्त, जो किसी भी रूप या योनि में इस अराध्य का सहवास और साहचर्य चाहता है। यही है उसका प्रेम, यही है उसकी अनन्य भक्ति।

संदर्भ

1. मुगल साम्राज्य, आर.सी. मजूमदार, पृष्ठ 69
2. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, गोकुलनाथ, पृष्ठ 121

3. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 20
4. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 143
5. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 75
6. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 20
7. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 122
8. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 111
9. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 106
10. रसखान ग्रंथावली, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 172

Copyright © 2015, Dr. Gajendra Mohan. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.